# जय माता दी



# लेखकीय

''माली सींचे सौ घड़ा, ऋतु आए फल होय' यह कथन मुझे आज इसके प्रकाशन के सामने प्रामाणिक लग रहा है। प्रस्तुत रचना माँ भगवती की अनुकम्पा एवम् मानस गुरूश्री 1008 बाबा भैरूं नाथ के शुभाशीर्वाद से 20 अप्रैल 1975 राम नवमी, रविवार को पूर्ण हुई। मेरा विश्वास और कौतुहल उस समय और भी दृढ़ एवं चमत्कारिक हो गया जब माँ ने मेरे हृदय की पुकार को सुना और इस रचना को छायांकित किया।

तब से आज तक प्रति नवरात्रा (वर्ष में दो बार) नवरात्रापर्यंत इसका मनोयोग से पठन अनवरत चलता रहा। यह रचना श्री दुर्गा सप्तशती का छंदोबद्ध भावानुवाद है। आवश्यक पाठ भी इसके साथ संलग्न है।



मैं विश्वास के साथ यह सत्यापन करता हूँ कि इसका विश्वास, श्रद्धा तथा मनोयोग से सस्वर पाठ पाठक की मनोकामनाएँ अवश्य पूर्ण करेगा। अपने महत्कार्य की पूर्ति के बाद समर्पक द्वारा इस पुस्तक का प्रकाशन इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

जन सामान्य की भाषा में इसके आलेखन का एक कारण और भी है कि हर देवी भक्त इसके आधार पर भगवती की सफलतापूर्ण आराधना कर सकता है। इसके अतिरिक्त आप जैसे अनगिनत भक्तों द्वारा सस्वर वाचन पुस्तक को सिद्धि की ओर अग्रेषित करेगा। पुस्तक माँ भगवती के पुनीत प्रसाद के रूप में आपको समर्पित की जा रही है।

आशा है कि आप इसका सस्वर, शुद्ध एवं ध्यानवेष्ठित पाठ करके अपना कार्य सिद्ध करेंगे और पुस्तक को सुदृढ़ सामर्थ्य प्रदान करेंगे।

सधन्यवाद!

पुरुषोत्तम दास निर्मल

✡ ✡ ✡



# समर्पक की ओर से

पूर्व संकल्पित प्रकाशन, अपने महत्कार्य की सफलता के उपरांत, अत्यन्त श्रद्धा एवं कृतज्ञता के साथ, माँ भगवती के श्री चरणों में सादर समर्पित।

आपके शुभ चरित्र की यह गाथा, हर श्रद्धालु भक्त की मनोकामनाएँ पूर्ण करें और उत्तरोतर जनकल्याण के प्रति अपनी कृपा का दान करती रहे।

साभार

द्वितीय आवृति

दिनांक

5.10.2011

दुर्गानवमी

हेमंत निर्मल, एम.एस.सी.,एम.एड.
प्राचार्य, केन्द्रीय विद्यालय न.4
अम्बाला छावनी (हरियाणा)
फोन – 0171–2601705,2601753

✡ ✡ ✡



# अनुक्रमणिका

1. ध्यान
2. निष्कीलन
3. श्री सप्तश्लोकी दुर्गा
4. श्री दुर्गाष्टोत्तर शतनाम स्तोत्रम्
5. श्री देवी कवच
6. श्री अर्गला स्तोत्र
7. श्री दुर्गा सप्तशती
8. श्री दुर्गा मानस पूजा
9. श्री अष्टक
10. क्षमा प्रार्थना

## ध्यान

विविध आयुधों से शोभित हैं, जिनके तेजोमय दस हाथ।
आभूषण मण्डित नीलम–तन, उनके चरणों में नत माथ ।।

धनुष, बाण, कुण्डिका खड्ग, नव पद्म, वज्र, मधुपात्र दण्ड।
शंख, ढाल, शुभ अक्षमाल, घण्टा विशाल फरसा प्रचण्ड।।

पंकज आसीना लक्ष्मी माँ, ले गदा शक्ति और शूल चक्र।
महिषासुरमर्दिनि महाशक्ति, तुमको प्रणाम हे अटल छत्र।।

रक्तवसना, शशि किरीटिनि, मुण्डमाल सुशोभिता।
कमल आसीना, अभयदा, अरुणिमाँ, जय अम्बिका।।

शंख, चक्र, कृपाण, शूल, विशाल सिंह सुशोभिता ।
मेघवर्णा, चंद्रधारिणी, जयति अरि नाशा, जया।।



शरच्चन्द्र सम कांति, करों में, हल मूसल, शर चाप लिए।
शुम्भघातिनी, महासरस्वति, नमन तुम्हें शत जाप किए।।

देहलता पर शोभित जिनके, नागों की मणियों की माल ।
नागराज आसन पर शोभित, कर में माला कमल कपाल।।

तीन नेत्र, मस्तक पर चन्दा, जय जय पद्मावती महान ।
कोटि सूर्य सम छटा तुम्हारी, तुमको बारम्बार प्रणाम ।।

श्याम वर्ण रक्ताभ वसन, बेंदी ललाट मधुपान रता ।
शिखि पाठनरत वीणावादिनि, जय मातंगी वयं नता।।

सिद्ध रश्मियों से अवगुंठित, पाशांकुश शर चाप लिए ।
नमो नमो अणिमा वरदायिनी, प्राप्ति होय शत जाप किए।।

जय अध नारीश्वरी भवानी, स्वर्णप्रभा युक्ता वरदा ।
अक्षमाल पाशांकुशधारिणि, करें भक्त जयगान सदा ।।

रवि, शशि अग्नि नेत्र हैं जिनके, जय कामेश्वरी महामती।
जयति जयति शिवशक्ति स्वरूपा, जयति जयति जय महासती ।।

बाल पतंग रंग तन वाली, भुवनेश्वरी महान ।
अभयदान दो शैल निवासिनि, नित्य करें गुणगान ।।

सिंहासना नित्य बाला छवि, आयुध लिए अनेक ।
ज्योति स्वरूपा दुर्गे ज्वाला, रखो हमारी टेक ।।

उदित दिवाकर–कांति त्रिनेत्रा, चतुर्भुजा हे शिवा भवानी ।
रक्षित कर दो अभय दान दे, मुखरित कर दो निर्मल वाणी।।

✡ ✡ ✡



## निष्कीलन

ज्ञान शरीर त्रिवेद नयन हैं, शिव स्वरूप आनंद–निधान ।
अर्ध चंद्र मस्तक पर सोहे, जय शंकर, सर्वेश, महान ।।

मुक्त करो कीलित प्रसंग को, हो जिससे जग का कल्याण।
जिसे किया तुमने उद्घोषित, मोक्ष–प्राप्ति का शुभ सोपान।।

सादर करूँ समर्पित माँ को, अपना तन, मन, धन और प्राण ।
अब से आगे हर साधन को, समझूँगा माँ का वरदान ।।

मेरा कुछ अधिकार नहीं अब, जो कुछ है सब माँ का है।

आत्मसमर्पण करके ही, माँ की ममता को आँका है।।

जो अरदास करूँ जननी से, वही कामना पूरी हो ।

विनय और माँ की करूणा में, निमिष मात्र की दूरी हो ।।

सप्तशती द्वारा माँ का यह , अभिवादन फलदायक हो ।

निष्कीलित, निर्मल कर दो शिव, तुम संसृति के नायक हो।।

✡ ✡ ✡



# श्री सप्तश्लोकी दुर्गा

**शिव उवाच :–**

भक्त सुलभ तुम भगवती, संतत पूरण काम।
जो कलि में हो सिद्धि प्रद, कहो यत्न अभिराम ।।

**देव्युवाच :–**

देव बताती हूँ तुम्हें, उत्तम एक उपाय ।
अम्बा–स्तुति सब सिद्धि प्रद, सुनो देव चित लाय।।

1) जो विद्वानों के मन को भी, अपने अधीन बनाती है।
है वही महामाया देवी, जो महाशक्ति कहलाती है।।

2) उस भव–भय हारिणि दुर्गा की, मंगल हित जग पूजा करता ।
दारिद्रय दुख भयनाशिनी का, मन परहित द्रवित हुआ करता ।।

3) हे शिवा सर्व मंगल करनी, सब सिद्धि दायनी नमो नमो ।
त्र्यंबके! तुम्हारी शरण पड़े, गौरी नारायिणि नमो नमो ।।

4) जो दीन दुखी शरणागत हो, तुम करती उसकी रखवाली ।
सबके संकट हरने वाली, सबका पालन करने वाली ।।

5) तुम हर स्वरूप में शक्तिमयी, सर्वेश शक्ति कहलाती हो ।
हे दुर्गा देवी नमो नमो, हर भय से तुम्हीं बचाती हो ।।

6) जो रोग शोक से घिरे हुए, जग से ठुकराए जाते हैं।
तुमसे आश्रय पा भाग्यहीन भी, भाग्यवान बन जाते हैं।।

7) हे अखिल सृष्टि की सुरेश्वरी! सब बाधाएँ, सब त्रास हरो ।
है एक काम निर्मल अब तो, मेरे वैरी का नाश करो ।।

✡ ✡ ✡



# श्री दुर्गाष्टोत्तर–शतनाम् स्तोत्रम्

**श्री शंकरोवाच**

जग हिताय शिव ने दिए गौरी को वे नाम।
जिनके अन्तर्जाप से पूर्ण होयँ सब काम ।।

अष्टोत्तर शतनाम बोलकर, दुर्गा का गुणगान किया।
जगदम्बा की तुष्टि हेतु, शिव ने सुन्दर सोपान दिया ।।

सती, जया, चित्रा, भवमोचनि, भवप्रीता, दुर्गा, भव्या।
आद्या, शूल, पिनाकधारिणी, चिता, अनन्ता महातपा ।।

बुद्धि, चित्तरूपा, चिति, सत्ता, भाव्या, आर्या, सदागति ।
मनः चण्डघण्टा सुर सुन्दरि, प्रत्यक्षा, यति रौद्रमुखी ।।

कालरात्रि, युवती, जलोदरी, शिवदूती, पाटलावती ।
तपस्विनी, सावित्री, प्रौढ़ा, क्रूरा, सत्या, महोदरी ।।

मधुकैटभहंत्री, कैशौरी, पुरूषाकृति, नित्या विमला ।
महिषासुरमर्दिनी, चामुण्डा, ब्रह्मवादिनी, महाबला ।।

चण्डमुण्डघातिनी, वनदुर्गा, मातंगी पाटला क्रिया ।
शुम्भनिशुम्भ विदारिणी, बहुला, लक्ष्मी, ऐन्द्री, बलप्रदा ।।

अग्निशिखा, शाम्भवी, अनन्ता, कल मंजीरानुरंजनी ।
मुक्तकेशिका, परा, अनन्ता, कात्यायिनी, परमेश्वरी ।।

दक्ष सुता, सर्वासुरघातिनि, दक्ष–यज्ञ–विध्वंस रता ।
कन्या मात्र कुमारी ज्ञाना, पट्टाम्बर, सद्रत्नप्रिया ।।

देवजननि संतत बाला छवि भद्रकालिका, महेश्वरी ।
जय मतंग मुनि की आराध्या, जय भीमा, जय तपेश्वरी ।। **(13)**

कौमारी सद्बुद्धिप्रदायिनी, नित बालाछवि, सुपूजिता ।
विविध वाहनों में शोभित छवि, सब शस्त्रों से सुसज्जिता।।

बहुल प्रेमिका, दानवघातिनी, घोरस्वरूपा शक्तिमयी ।
जय उत्कर्षप्रदायिनी मैया, सर्वशास्त्र, सद्ज्ञानमयी।।

सत्यानन्दस्वरूपिणि, भाविनि, ब्राह्मी, साध्वी, मंत्रमयी।
जय वैष्णवी, भवानी, सुन्दरि, वृद्धा, जननी, महामती ।।

अति कराल, अति सौम्य स्वरूपा, तीन नेत्र वाली, माया।
स्वाभिमान प्रेरिका, अभव्या, जय अनादि छवि की छाया।।

जय वाराही भयंकरी, जय–जय नारायणि मुक्ति–प्रदा ।
निर्मल छवि के स्मरण मात्र से पाते सब सुख शांति सदा।।

✡ ✡ ✡ **(14)**

# श्री देवी कवच

**मार्कण्डेय :–**

श्रद्धानत हो पूछता, ऐसा कहो उपाय ।
जो सबकी रक्षा करे, परम गुप्त कहलाए।।

**ब्रह्मा :–**

गोपनीय साधन महा, सुख का परम निकेत ।
केवल देवी कवच है, वैभव का संकेत ।।

जगदम्बा के नौ पवित्र नामों का करके अविरल जाप ।
सब सुख सहज प्राप्त हो जाते, कट जाते हैं सारे ताप ।।

शैलसुता नित ब्रह्मचारिणि, चन्द्रघंटिका दिव्य सुमात।
कूष्मांडा हे! स्कंदमाता हे! कात्यायिनि, वरदा, निष्णात।। **(15)**

कालरात्रि, अति गौरवर्ण, सब सिद्धिदायिनी, माँ अभिराम।
भक्त–वत्सला जगदम्बा के, ये पुनीत सुंदर नौ नाम ।।

अग्नि–पात में, शत्रुघात में, रण में, संकट में यह जाप।
जो शरणागत होकर करता, मिट जाते सब दुख संताप।।

संकट, अशुभ, शोक भय सारे, उसके आते नहीं समीप ।
जिसका पथ आलोकित करते, नवदुर्गा के जगमगदीप।।

भक्तिभाव से नाम तुम्हारा, जपते जो श्रद्धा के साथ।
उनकी उन्नति निश्चित जग में, उनकी रक्षा माँ के हाथ।।

प्रेत सवारी चामुंडा की, महिषासीना वाराही।
ऐन्द्री ऐरावत पर राजत, वृषभवाहिनी महेश्वरी ।।

**(16)**

गरूड़ वैष्णवी का वाहन है, कौमारी का वाहन मोर।
कमलासन पर शोभित कमला, कर में अखिल विश्व की डोर ।।

वृषभासीना गौरी मैय्या, सुंदर, सुभग, सुकोमल गात।
हंसारूढ़ा भूषित ब्राह्मी, अनुपम छवि वरदायिनी मात।।

ममतामयी सकल माताएँ, योग, शक्ति, सुख की आगार।
नाना रत्नाभूषण से नित, होता है इनका श्रृंगार ।।

कभी भक्त की रक्षा हित, अति क्रोधित हो रथ पर चढ़ती ।
शंख, चक्र, हल, वज्र, शक्ति, मूसल लेकर आगे बढ़ती ।।

खेटक, तोमर, परशु पाश ले, करती सुख से समर–विहार ।
कुंत, शूल और धनुष बाण से, दानव का करती संहार।। **(17)**

दानव दल का सर्वनाश कर, भक्तों को निर्भय करती ।
इसीलिए नाना आयुध, कोमल तन पर धारण करती ।।

नमन तुम्हें हे रौद्र स्वरूपा, महाबला, संकट हरनी ।
महापराक्रमयुता, सुमाता, भक्तों का मंगल करनी ।।

दिव्य कांति, अति दर्शनीय तुम, भक्तों को निर्भय कर दो ।
पग पग पर संरक्षण देकर, जीवन को जगमग कर दो ।।

पूर्व दिशा में ऐन्द्री राखे, अग्निकोण ज्वाला मैया।
दक्षिण में राखे वाराही, नैऋत, असिधारिणि मैय्या।।

**(18)**

पश्चिम में वारूणी विराजे, वायुकोण हरिणासीना ।
उत्तर में कौमारी माँ, ईशान शूल–संगर लीना ।।

ऊपर रक्षक हो ब्रह्माणी, नीचे वैष्णवी माता ।
इसी भाँति सारी माताएँ, सिद्ध करें अपना नाता ।।

सभी दिशाओं में चामुंडा , करना तुम ही रखवाली ।
शव–वाहना, मुण्डमालयुत, महाविकट खप्पर वाली ।।

आगे जया, पृष्ठ पर विजया, बाएँ अजिता महेश्वरी।
दहिने अपराजिता महामति, शिखर विराजे उद्योतिनी।।



मस्तक उमा करे रखवाली, मालाधरी ललाट की।
यशस्विनी भौहों की रक्षक, रक्षक रहे कपाट की ।।

भृकुटि त्रिनेत्रा यमघंटा माँ, करे नाक की रखवाली ।
आँखों की शंखिनी, कान की द्वारवासिनी महतारी ।।

घ्राण शक्ति रक्षिका सुगंधा, अधर चर्चिका अमीकला ।
रक्षित करे कपोल कालिका, कानों की शांकरी छटा ।।

सरस्वती जिह्वा पर राजे, दाँतों पर माँ कौमारी ।
घट में चित्रघंटिका राजे, कण्ठ चण्डिका रखवारी ।।

ताल, चिबुक, वाणी में क्रमशः माया, कामा, सुमंगला ।
भद्रकालिका गले विराजे, धनुर्धरी पृष्ठ सुसंस्थिता ।।

नीलकण्ठिका ग्रीवा राजे, नलकूबरि नलिका में हो ।
स्कंधरक्षिका देवि खड्गिनी, वज्रधारिणी भुजा में हो।।

हाथों को दण्डिनी सम्भाले, अम्बा अँगुलिन को पाले।
नख में शूलेश्वरी विराजे, कुलेश्वरी उर ज्वाला ले ।।

स्तन की रक्षक महादेवी हो, मन की चिन्ता विनाशिनी ।
उर की रखवाली ललिता हो, उदर बसे शूलधारिणी ।।

**(21)**

नाभि कामिनी को अर्पित है, गुह्य भाग की रखवाली।
गुह्येश्वरी, पूतना, कामिका तथा महिष आसन वाली।।

कटि प्रदेश भगवती विराजे, जानू विंद्याचल वाली ।
महाबला जंघा की रक्षक, जो सब सुख देने वाली ।।

गुल्फ नारसिंही राखे, जुग पाद–पृष्ठ प्रतिभा वाली ।
श्री पग की अंगुलिन को राखे, तलवे राखे तल वाली।।

दाँतों की विकराल दन्तिका, केशों की उर्ध्व केशिका ।
रोमावलि रक्षक कौवेरी, वागीश्वरी के हाथ त्वचा ।। **(22)**

रक्त, मांस, मज्जा की रक्षा, करे सदा माँ पार्वती ।
कालरात्रि आँतो को राखे, पित रक्षक मुकुटेश्वरी।।

पद्मकोष में पद्मावति हो, कफ में चूड़ामणि रहे ।
जोड़ जोड़ में रमे अभेद्या, नखद्युति ज्वालामुखी रहे ।।

शुक्र रक्षिका हो ब्रह्माणी, छत्रेश्वरी हो छाया की ।
स्वाभिमान, मन, बुद्धि, सभी की धर्मधारिणी महतारी।।

प्राणापान आदि वायु की, वज्रधारिणी रखवाली ।
माँ कल्याण शोभना हो, इन प्राणों को रखने वाली ।।



गंध, रूप,रस,शब्द, स्पर्श को माँ योगिनि का संबल हो ।
सत,रज,तम–संचार, सदा माँ नारायिणि से अविरल हो।।

वाराही, वैष्णवी सदा हो, आयु, धर्म की प्रवाहिका ।
लक्ष्मी और चक्रिणी हों धन, विद्या, यश की प्रसारिका।।

जाति, गोत्र पशु की रक्षक हो, इन्द्राणी और चण्डिका।
महालक्ष्मि पुत्रों को राखे, पत्नी को भैरवी सदा ।।

सुपथा मेरा पंथ सँवारे, मगरक्षक माँ क्षेमकरी ।
राजद्वार पर महालक्ष्मी हो, सभी जगह विजयेश्वरी ।।

पापनाशिनी मात जयंति, तुम सर्वांगों को रखना ।

जिनका वर्णन यहाँ न आया, उनकी रक्षा तुम करना।।

कवच–पाठ करके ही जो जन आगे कदम बढ़ाता है।

सिद्ध काम हो, विजय लाभ हो, कभी न कष्ट उठाता है।।

धरती पर वैभव में खेले, निर्भय मौज उड़ाता है।

दिव्य कवच धारण करके वह जग प्रसिद्ध बन जाता है।।



दुर्लभ देवी कवच भाव से, संध्या के संग पाठ करे।

दिव्य कला और विजय प्राप्त कर, सौ वर्षों तक अडिग रहे।।

आधि, व्याधि, विष के प्रभाव से, देवी कवच बचाता है।

तंत्र, मंत्र, अभिचार सभी कुछ, स्वयं नष्ट हो जाता है।।

बाहर भीतर जो अनिष्ट कर भूत पिशाच कहाते हैं।

दिव्य कवच धारण करने पर, स्वतः दूर हो जाते हैं।।

राज काज में वृद्धि प्रदायक, यश वैभव देने वाला ।

कौन भला इसके समान रक्षक, सब सुख देने वाला।।

जब तक धरती, वन, पर्वत की, चर्चा है भूमंडल पर।

तब तक माँ के सेवक की, संतति सुख भोगे भूतल पर।।

देह त्याग कर भक्त सदा, उस परम धाम को जाएगा।

शिव की निर्मल प्रतिभा में मिल, शिव स्वरूप हो जाएगा।।

✡ ✡ ✡



# श्री अर्गला स्तोत्र

1. भद्रकालि जय, कपालिनी जय, मंगल करनी उत्कृष्टा।
   जय दुर्गा, जय क्षमा , शिवा जय, जय धात्री, जय स्वाहा, स्वधा।।
2. जय चामुंडा, जय दुख नाशा, सर्वव्यापिनी नमो नमो।
   काल रात्रि जय परम पुनीता, जय जग स्वामिनि नमो नमो ।।
3. मधुकैटभघातिनि जगदम्बा, आद्या, वरदायिनि काली।
   रूप ज्ञान दे, विजय मान दे, यश दे, माँ कर रखवाली।।
4. महिषासुरमर्दिनि! भरो सुखों से, भक्तों की झोली खाली।
   रूप ज्ञान दे, विजय मान दे, यश दे, माँ कर रखवाली।।
5. रक्तबीज और चंडमुंडघातिनि!, अमृत से भरो प्याली।
   रूप ज्ञान दे, विजय मान दे, यश दे, माँ कर रखवाली।।

6. शुंभ निशुंभ, धूम्रविलोचन का, पल में वध करने वाली।
रूप ज्ञान दे, विजय मान दे, यश दे, माँ कर रखवाली।।

7. सबसे वंदित चरण युगल, सबके जीवन की हरियाली।
रूप ज्ञान दे, विजय मान दे, यश दे, माँ कर रखवाली।।

8. हैं अनन्त गुण रूप तुम्हारे, शत्रु नाश करने वाली ।
रूप ज्ञान दे, विजय मान दे, यश दे, माँ कर रखवाली।।

9. सदा भक्ति से नमन करें जो, उनके पाप हरो काली।
रूप ज्ञान दे, विजय मान दे, यश दे, माँ कर रखवाली।।

10. रोग शोक से उन्हें मुक्त कर, राहें कर दो हरियाली।
रूप ज्ञान दे, विजय मान दे, यश दे, माँ कर रखवाली।।



11. भक्तिभाव से तुम्हें पुकारें, करना उनकी रखवाली ।
रूप ज्ञान दे, विजय मान दे, यश दे, माँ कर रखवाली।।

12. सुख, वैभव, आरोग्यदान दो, भरदो जीवन की प्याली।
रूप ज्ञान दे, विजय मान दे, यश दे, माँ कर रखवाली।।

13. बलवर्द्धक वरदान मुझे दो, डसो शत्रु को बन ब्याली।
रूप ज्ञान दे, विजय मान दे, यश दे, माँ कर रखवाली।।

14. कल्याणी कल्याण करो, नित जीवन में हो दीवाली ।
रूप ज्ञान दे, विजय मान दे, यश दे, माँ कर रखवाली।।

15. देवासुर मुनि मानव सबसे, नित आदर पाने वाली।
रूप ज्ञान दे, विजय मान दे, यश दे, माँ कर रखवाली।।

16. अपने जन को यश, विद्या, वैभव सुख से भरने वाली।
रूप ज्ञान दे, विजय मान दे, यश दे, माँ कर रखवाली।।

17. अति प्रचंड दानव–दलनी माँ, भरो विनीतों की थाली।
रूप ज्ञान दे, विजय मान दे, यश दे, माँ कर रखवाली।।

18. ब्रह्मवंदिता, चतुर्भुजी, सेवक यदि कोयल, तुम डाली।
रूप ज्ञान दे, विजय मान दे, यश दे, माँ कर रखवाली।।

19. विष्णु–पूजिता, सदा अंबिका, धवल शिखर पर्वत वाली ।
रूप ज्ञान दे, विजय मान दे, यश दे, माँ कर रखवाली।।

20. शिव आराध्या, तुम्हें नमित हैं, लता, पुष्प तरूवर, डाली।
रूप ज्ञान दे, विजय मान दे, यश दे, माँ कर रखवाली।।



21. इन्द्रादिकसुर वंदन करते, श्रद्धानत हो मतवाली।
रूप ज्ञान दे, विजय मान दे, यश दे, माँ कर रखवाली।।

22. तुम प्रचंड दुर्दम्य दैत्य का, पल में मद हरने वाली।
रूप ज्ञान दे, विजय मान दे, यश दे, माँ कर रखवाली।।

23. तुम असीम आनंद विभव से, भक्त निलय भरने वाली।
रूप ज्ञान दे, विजय मान दे, यश दे, माँ कर रखवाली।।

24. जीवन–सहचर संग सदा मैं, जीवन का उपभोग करूँ।
धर्म कर्म मर्यादा पालूँ, बिना कष्ट भव पार तरूँ।।

25. जो यह उत्तम स्तुति करके फिर सप्तशती का पाठ करे।
उसे मिले निर्मल सुख वैभव, माँ सब संकट नाश करे।।

✡ ✡ ✡

# श्री दुर्गा सप्तशती

**मार्कण्डेयोवाच :–**

अष्टम मनु की दिव्य कथा, हम तुमको आज सुनाते है ।
जगदम्बा के अवतारों का, दिव्य भेद समझाते हैं।।

पूर्व काल में हुए यहाँ पर सुरथ नाम के नृपति महान।
भूमण्डल पर गूँज रहा था, उस बलशाली का जयगान।।

कोला विध्वंसी आए, उसकी सत्ता हथियाने को।
सुरथ हार कर वन में निकले, छोड़ा महल, खजाने को।।

योगिराज मेधा मुनि के आश्रम में कुछ दिन वास किया।
किन्तु मोह से लिप्त रहे, मन में व्यापक गत वैभव था।। **(33)**

वहीं एक दिन राजा की, इक व्यथित वैश्य से भेंट हुई।
था 'समाधि' भी निष्कासित, पर बुद्धि मोह से ग्रस्त रही।।

एक रोग से ग्रस्त युगल ने, मेधा मुनि को आ घेरा ।
एक एक कर बता दिया, दोनो ने किस्मत का फेरा ।।

धीर बँधाकर ऋषिवर ने, उनको मधुमय उपदेश दिया।
मोहमयी है सकल सृष्टि, जड़ चेतन सब में मोह भरा।।

पशु पक्षी सब उसी महामाया, के वश में रहते हैं।
बच्चों का पालन करते हैं, खुद उत्पीड़न सहते हैं।।

सृजन, भरण, संहार सभी, जो अपने हाथों करती है।
उसी योग–निद्रा देवी के वश में अम्बर धरती है।। **(34)**

महाप्रलय के समय शेष–शायी के कानों के मल से।
मधुकैटभ उत्पन्न हुए तब ब्रह्मा डरे युगल खल से।।

ब्रह्मा ने तब महायोग–निद्रादेवी का स्तवन किया।
आदि शक्ति को जागृत करने, महामंत्र का मनन किया।।

हो प्रसन्न तब महातेज, ब्रह्मा के सम्मुख प्रकट हुआ।
तभी विष्णु से मधुकैटभ का, बाहुयुद्ध अति विकट हुआ।।

विष्णु शक्ति से हो प्रसन्न, दैत्यों ने खुद वरदान दिया।
तभी विष्णु ने उन्हें पछाड़ा, ब्रह्मा ने गुणगान किया।।

✡ ✡ ✡



## अध्याय : 2

देवासुर संग्राम हुआ, सौ वर्षों तक इक बार ।
महिषासुर ने सभी, देवताओं को दिया पछार ।।

इन्द्रासन हथिया कर बैठा, जब दानव सरदार।
तब सारे सुर ब्रह्मा जी सँग, पहुँचे हरि के द्वार।।

''नाथ! दैत्य महिषासुर ने, फैलाया वो आतंक।
मारे मारे फिरैं देवता, करो उपाय तुरन्त''।।

क्रुद्ध विष्णु की भृकुटि तन गई, निकला तेज अपार।
ऐसे ही देवों के तन में हुआ शक्ति–संचार।।

वह अपार नव रश्मि पुंज, हो गया व्याप्त सर्वत्र।
कभी ने आई कहीं, देखने में वह छवि अन्यत्र।।

नारी बनकर सिमट गई वह दिव्य शक्ति तत्काल ।
उस देवी के दर्शन करके, सुरगण हुए निहाल।।

अंग अंग का सृजन हुआ, देवों की छवि अनुसार ।
स्तवन सभी ने किया, सभी ने दिये दिव्य उपहार ।।

दिया वरुण ने शंख, अग्नि ने शक्ति, विष्णु ने चक्र।
शिव ने शूल, इन्द्र ने घण्टा, सब देवों ने शस्त्र।।

रवि ने तेज भरा नस नस में, नद ने दिया सँवार।
दिव्य वस्त्र आभूषण दे, मणि–मण्डित पंकज–हार।। **(37)**

मादक मधु का पात्र मिला था, धन–कुबेर के हाथ।
''हो मदांध असुरों को मारो, तज विवेक का साथ''।।

सम्मानित होकर जगदम्बा, गर्ज उठी तत्काल।
काँप उठा नभ, धँसी धरा, रव था अत्यन्त कराल ।।

महिषासुर ने सुनी गर्जना, कम्पित हुआ शरीर।
असुर महारथियों से बोला, छुपा हृदय की पीर।।

''हे चिक्षुर, चामर, असिलोमा, हे उदग्र वैताल।
वाष्कल, पारिवारित, विडाल, उद्धत, ताम्र, विकराल ।।

उग्रवीर्य, उग्रास्थ, महाहनु, दुर्धर, दुर्मुख वृन्द।
सभी सुनो यह घोर गर्जना, रण का करो प्रबन्ध।। **(38)**

अपने अपने अस्त्र सम्भाले, चले अतुल बलवान।
फटी धरा, कँप गया गगन, वह हुआ घोर संग्राम।।

महाशक्ति ने असुरों की, सेना का कर संहार।
मचा दिया कुहराम, बहा दी वहाँ खून की धार ।।

कट कट गिरी असुर सेनाएँ, पटे धरा आकाश।
बाण, शक्ति और शूलों ने, फैलाया महाविनाश।।

महिषासुर ने युद्ध किया, तब धर धर नाना वेष।
किन्तु महाविकराल शक्ति ने, छोड़ा रंच न शेष।।



महिषासुर का अट्टहास सुन, बोली शक्ति महान।
''गर्ज गर्ज मतिमन्द, करूँ मैं जब तक मदिरापान।।
अभी तुम्हारी मृत्यु देखकर पुलकित होगें देव।
और तुम्हारी मिट जाएगी, दुराचरण की टेव''।।

तभी उठाई जगदम्बा ने इक लम्बी तलवार।
महादैत्य महिषासुर का सर, धड़ से दिया उतार।।

देवों ने तब मृदुवाणी से, स्तवन किया मधुघोल ।
देवी के आराधन में, गूँजे अमरों के बोल ।।

✡ ✡ ✡

## अध्याय–3

माँ! तेरे पावन चरणों में, देवों का शत बार प्रणाम ।
तुम बिन कौन सँवारे मैय्या, निर्बल जन के बिगड़े काम।।

है अनन्त गुण नाम तुम्हारे, शिव भी सकें न जिन्हें बखान ।
कण–कण में प्रतिबिम्बित हो तुम सृष्टि तुम्हारा विशद वितान।।

सत, रज, तम में व्याप्त तुम्हीं, करती हो सृजन, भरण, संहार।
स्वाहा, स्वधा तुम्हीं बन देती, देव पितर को तृप्ति अपार।।

परा, अनन्ता, मेधा, दुर्गा, गौरी, लज्जा, जगनैय्या।
धर्मधारिणी, दयामयी, हो कल्याणी, अनुपम मैय्या।।



अपने विविध आयुधों से माँ, भक्तों का सन्ताप हरो।
सभी दिशाओं से रक्षा कर, हम सबका कल्याण करो।।

हो प्रसन्न जगदम्बा ने, तब देवों को वरदान दिया।
जब जब याद करोगे मुझको, तुम्हें मिलेगी शक्ति सदा।।

यह कहकर दुर्गा देवी, क्षणभर में अन्तर्धान हुई।
देवों की मण्डली मुक्त हो, लोकों में छविमान हुई।।

✡ ✡ ✡

## अध्याय–4

दोहा :– जब जब देवों ने किया, कुछ दिन मंगल काम।
तब तब असुरों ने किया, उनके सँग संग्राम।।

चौ. :– शुम्भ–निशुम्भ निशाचर भारी, हुए युगल अति पापाचारी।
देवों का अधिकार नसाया, मनचाहा आतंक मचाया।।

लज्जित होकर सुरगण सारे, फिरे दुखी हो मारे मारे।
अम्ब वचन की तब सुधि आई, होंगी अब भी वही सहाई।।

हिमगिरि पर पहुँचे दिग्पाला, सबने स्तुति का पंथ सम्भाला।
''नमों नमों माँ शिवा भवानी, रौद्रा, भद्रा, अम्बा रानी।

वृद्धि, सिद्धि, लक्ष्मी, शर्वाणी, जय दुर्गे जय जय कल्याणी।
नमो चेतना, बुद्धि स्वरूपा, नमो क्षुधा, जय निद्रा रूपा।।

रमीं सदा जो बन कर छाया, तृष्णा, शक्ति, क्षमा तव माया।
तुम्हीं जाति हो, लाज तुम्हीं हो, श्रद्धा, शान्ति, सुकाज तुम्हीं हो।।

जय लक्ष्मी, जग पालनहारी, कांति, वृत्ति, स्मृति भवभयहारी।



दोहाः– तुम्हीं दया बनकर सदा करती करुणा दान
तुम्हीं तुष्टि बन कर सदा, करती अमृत पान।।

चौपाई :– नमो नमो जग पालनहारी, तुमसे भ्रमित सकल नर नारी ।
व्याप्ति देवि, चेतना अजानी, किसने तव महिमा पहचानी।।

आज दुखी हैं सुरगण सारे, मैय्या संकट हरो हमारे''।
शैल सुता बन तभी पधारी, ज्यों रोते शिशु हित महतारी।।

''हे देवो! तुम कैसे आए? मीठे मीठे वचन सुनाए!''
तभी कौशिकी पड़ी दिखाई, जो दुर्गा के तन से आई।।

असुरों से आतंकित सारे, मुझे बुलाते देव बिचारे।

दोहाः– तब देवों ने विनय से प्रकट किया मन्तव्य।
''माँ! दुष्टों को फिर करो, काल–यज्ञ की हव्य।।''

चौपाई :– शैल खण्ड पर खड़ी भवानी, रूप राशि नहिं जात बखानी।

चण्ड मुण्ड ने रूप निहारा, कहा शुम्भ से इतिवृत सारा।
''रत्नों पर अधिकार तुम्हारा, फिर यह रत्न रहा क्यों न्यारा?''

गर्जा शुम्भ महा अभिमानी, ''शैल सुता हो मेरी रानी''।
हे सुग्रीव, उसे समझाओ, उसको तुरंत यहाँ ले आओ।

उसे सकल प्रतिभा दर्शाना, फिर मेरा प्रस्ताव सुनाना।
दूत हिमालय पहुँचा जाई, कर प्रणाम सब बात सुनाई।।

**(45)**

''शुम्भ वीर है हमने माना, पर क्या करूँ यही प्रण ठाना।
जो रण करके मुझे हराये, वही मुझे किंकरी बनाये ।

कहो शुम्भ से तुम यह जाकर, पहले युद्ध करे, इत आकर।
रण में जीत मुझे ले जाए, तब मनचाहा मोद मनाए।''

दोहा :– दूत तनक कर चल दिया, शुम्भ गया बौराय।
शैल सुन्दरी के लिए करने लगा उपाय।।

✡ ✡ ✡

## अध्याय–5

चौपाई :– ''सुनो धूम्रलोचन बलशाली, यों न मिलेगी पर्वतवाली ।
तुम विशाल सेना ले जाओ, पहिले मानिनि को समझाओ।। **(46)**

यदि वह कहा न करे तुम्हारा, बल से कर देना निपटारा।
झोंटा पकड़ उसे ले आना, या कराल की भेंट चढ़ाना''।।

धूम्रविलोचन गिरि पर धाया, अति विशाल इक कटक सजाया।
जगदम्बा को जा ललकारा, देखूँ मैं अभिमान तुम्हारा।।

''शुम्भ, निशुम्भ अतुल बलशाली, तूने उनकी आज्ञा टाली।
सुन शठ, मैंने जो व्रत ठाना, दुष्ट जन्य उत्पात मिटाना।।''

यह सुन शठ, मैय्या पर झपटा, ''हूँ'' करके मैय्या ने पटका।
उधर सिंह ने दुष्ट पछारे, क्षण भर में सब लगा किनारे।।

दोहाः– दैत्यराज ने जब सुना, धूम्रविलोचन नाश।
चण्ड–मुण्ड को दल सहित भेजा माँ के पास।।

**(47)**

चौपाईः– चण्ड–मुण्ड हिमगिरि पर आए जगदम्बा को वचन सुनाए।
अभी तुझे यम लोक पठाएँ, माटी में सब गर्व मिलाएँ।
तमक उठी यह सुनकर ज्वाला, हुआ लाल मुख–मंडल, काला।
प्रकटी तभी भयंकर काली, ज्यों बांबी से क्रोधित ब्याली।।

माँसहीन अति विकट सरीरा, धँसे नेत्र, भ्रूबंक अधीरा।
मुंडमाल, विकराल विराजे, खड्गपाश हाथों में साजे।।

लपलपाए, जिह्वा रतनारी, शब्द कठोर गर्जना भारी।
ले खप्पर सेना पर छाई, गर्म रक्त से प्यास बुझाई।।

अट्टहास कर रण में विचरी, ज्यों विद्युत धरती पर उतरी।
पल में कुल निश्चर संहारे, चण्डमुण्ड के मुण्ड उतारे।।

**(48)**

दोहाः– मस्तक लेकर कालिका, गई शक्ति के पास।
चामुण्डा के नाम से, हुई जगत विख्यात ।।

✡ ✡ ✡

## अध्याय – 6

जब चण्ड मुण्ड वध जनित क्रोध को, शुम्भ निशुम्भ दबा न सके।
सेनाओं को अपने बल पौरुष का, अपवाद दिखा न सके।।

बोले रण–कौशल दिखलाने का अवसर सम्मुख आज खड़ा।
हे कोटिवीर्य, हे कंबु मौर्य, हे वीर उदायुध शक्ति लड़ा।।

कालक, दौह्रद और कालकेय, चल पड़ो अतुल बल सेन सजा।
उस अभिमानिनि को आज मिले, गर्वीलेपन की उचित सजा।। **(49)**

अतुलित बलशाली शुम्भ दैत्य, चल पड़ा स्वयं भी खड्ग उठा।
जगदम्बा ने असुरों को लख, की घोर गर्जना, गगन हिला।।

उस तुमुलनाद को सुनकर के असुरों ने धावा बोल दिया।
चण्डी ने भी अपने तप से, संचित अतुलित बल खोल दिया।।

सब देव शक्तियाँ भिन्न–भिन्न, रूपों में सम्मुख आ पहुँची।
इस भाँति मातृदल की सत्ता, हो गई असुर दल से ऊँची।।

थी हंसवाहिनी ब्रह्म शक्ति, थी विष्णु शक्ति गरूड़ासन पर ।
शिव शक्ति वृषभ पर आ पहुंची, अम्बा मयूर के आसन पर।।

वाराही धर वाराह रूप, ऐन्द्री ऐरावत पर आई।
नरसिंह रूपिणी भयंकरी, बन काल निशाचर का छाई।। **(50)**

अनगिनत शक्तियों से रक्षित, चण्डिका तभी शिव से बोली,
''तुम जाकर कहो निशाचर से, वह भरे न मुंडों से झोली।।
देवों हित तज कर यज्ञ भाग, पाताल तुरन्त चले जाएँ।
यदि करें दैत्य 'ना' तो कहना,' लो मेरी शक्ति तुम्हें खाए''।।

शिवदूती द्वारा प्रेषित शिव, चल पड़े शुम्भ को समझाने ।
पर काल चढ़ा हो जिसके सर, वह ज्ञान भंगिमा क्या जाने ।।

क्षण भर में युद्ध छिड़ा भारी, नरमुण्ड कटे बह चली धार।
हर मातृशक्ति सक्रिय होकर करती थी सुख से रण विहार।।

था अट्टहास इस ओर प्रबल, तो उधर हो रहा चीत्कार।
गर्जन, उत्खनन, रुदन, मर्दन, रण खेत हुआ इक मद विहार।।



वह महानाश की उठी ज्वाल, हवि हुए निशाचर भस्मसात्।
शस्त्रों से गगन पटा भू पर, बह चला रक्त का लघु प्रपात।।

असुरों का पतन देख सहसा, इक प्रबल दैत्य सम्मुख आया।
जिसके शोणित की बूंदों मे थी सृजन शक्ति की इक माया।।

उस 'रक्तबीज' का वध करने , जब योगिनियों ने वार किए।
तब रक्त गिरा जन्मे असंख्य, नव रक्तबीज हथियार लिए।।

''मारो, मारो'' कह कर अनगिन दानव माताओं पर झपटे।
तब मातृगणों के अन्तस् में, जग उठी महातप की लपटें।।

बोली चण्डी ''हे चामुण्डा! तुम अपने मुख को फैलाओ।
मेरे प्रहार से रक्त गिरे, वह शत्रु–रक्त चट कर जा़ओ।।

तुम महाज्वाल बन कर धधको, सब भस्मसात् पल में कर दो।
असुरों के रक्त और मस्तक से तुम मेरा खप्पर भर दो।।

जब रक्तहीन हो रक्तबीज, निष्प्रभ, निर्बल हो जाएगा।
तब मेरे प्रबल प्रहारों से आहत भू पर सो जाएगा''।।

आदेशित होकर चामुण्डा, मुख फैलाए, रण में विचरी।
आघातों से जब रक्त बहा, इक बूंद न मुख से दूर गिरी।।

इस भाँति खपाया रक्तबीज, देवों को खुशी अनन्त हुई।
निश्चर भागे, सुर मुस्काए, उन्मत्त शिवाएँ नाँच उठी ।।

✡ ✡ ✡



## अध्याय–7

रक्तबीज वध सुना दैत्य ने, रोष किया भारी।
शुम्भ–निशुम्भ चढ़े सेना ले, निश्चर बलकारी।।

चम चम चम तलवार ढाल, जिनमें सौ चाँद जड़े।
हाथी, घोड़े, रथ, पैदल, निश्चर खूंखार चढ़े।।

रथ पर चढ़ कर शुम्भ, निशुम्भ, चले संगर करने।
चले मारने अथवा देवी के हाथों मरने।।

देवी के बाणों से कटकर, जब तलवार गिरी।
शक्ति चलाई तभी असुर ने माँ पर जहर भरी।।

शठ निशुम्भ से इसी भाँति, भीषण संग्राम हुआ।
किन्तु मातृ मण्डल अविजित, दानव हैरान हुआ।।

बाणों से घायल निशुम्भ, गिर कर बेहोश हुआ।
शुम्भ गर्जने लगा इधर, भारी आक्रोश हुआ।।

जब निशुम्भ को हुई चेतना, लेकर शूल चला।
माँ ने मार त्रिशूल तभी, उसको निश्शेष किया।।

तब निशुम्भ के वक्षस्थल से, एक दैत्य निकला ।
देवी पर झपटा, देवी ने उसका सर कुचला ।।

मृत निशुम्भ, दानव आतंकित, सक्रिय जगदम्बा।
दुष्टों का संहार मातृगण ने तत्काल किया।। **(55)**

शिवदूती, वैष्णवी, कालिका, दैत्य पछार रही।
वाराही, कौमारी, भीषण कर संहार रही।।

ब्रह्माणी, ऐन्द्री ने भी अनगिन दानव मारे।
उधर सिंह ने रक्त उलीचा, हुए ध्वस्त सारे।।

तभी शुम्भ ने आगे बढ़कर, माँ को ललकारा।
''गर्वीली, तुम निपट आश्रिता, वृथा गर्व सारा।।

अन्य नारियों के बल पर तुम अम्बर फाड़ रही।
और अकेली कह, राई का बना पहाड़ रही।।

हिम्मत हो तो रण में, तुम भी निराधार विचरो।
हो बल का अनुमान, अकेली होकर युद्ध करो''।। **(56)**

''दुष्ट! सदा मै एक शक्ति हूँ, देख ध्यान करके''।
सिमिट गई सब छटा देख ज्यों रंग दिवाकर के।।

जगदम्बा शुंभासुर में, भीषण संग्राम हुआ ।
कभी धरा पर, कभी गगन में, रण अविराम हुआ।।

बाणों की वर्षा से जब शठ ने माँ को घेरा।
क्रोध भरी माँ ने निज बल से, उड़ा दिया डेरा ।।

कभी शक्ति से, कभी शूल से प्रबल प्रहार किए।
किन्तु मातृबल के सम्मुख सब बल बेकार गए ।।

विरथ हुआ जब शुम्भ, क्रोध में ले मुगदर भागा ।
किन्तु बाण से टूट गया, जैसे कच्चा धागा ।।



माँ के आघातों से आहत, शुम्भ शक्तिधारी ।
जगदम्बा को लेकर तत्क्षण हुआ गगनचारी ।।

निराधार जगदम्ब युद्धरत, शंकित सुर सारे ।
''मैय्या! अब संहार करो, हम तो हिम्मत हारे ।।''

आर्तनाद सुन देवों का, जगदम्बा क्रुद्ध हुई ।
झट दे मारा दानव को, गतियाँ अवरूद्ध हुई।।

शुम्भ निधन से मुक्त हुआ युग खुशी अपार हुई।
तीन लोक में जगदम्बा की जय जय कार हुई।।

✡ ✡ ✡

# अध्याय–8

माता, सुमाता, ममतामयी तुम, संसार क्रीडास्थली तुम्हारी।
वरदायिनी हो, दुखहारिणी हो तुम्हीं, ने विपदा हरी हमारी ।।

तुम्हारी माया अपार मैय्या, तुम्हीं धरित्री जगधारिणी हो।
पयस्विनी तुम पराऽनन्ता, संसार सम्मोहनकारिणी हो ।।

तेजोमयी वैष्णवी तुम्हीं हो, कहें कहाँ तक महिमा तुम्हारी।
हो स्वर्ग अपवर्ग, मोक्ष तुम ही, ग्रहण करो अर्चना हमारी ।।

बदल रहा नित्य जगत तुम्हीं से, तुम्हीं तो शरणागत वत्सला हो।
त्रिनेत्रयुक्ता, कल्याणरूपा, सनातनी, गौरि, महाशिवा हो ।।

**(59)**

हंस–विमान–स्थिता–ब्रह्माणी मंत्र–पूत जल छिड़क रही।
वृषभवाहिनी, जय महेश्वरी, चन्द्रशूल छवि झलक रही ।।

मोर चढ़ी हे महाशक्ति जय, कौमारी शिखिवाहिनी जय।
चतुर्भुजी वैष्णवी नमन है, भू–धारिणी वाराही जय।।

भयंकरी नर–सिंह स्वरूपा, करती जग की रखवाली।
जय ऐन्द्री वृत्रासुर मर्दिनी, शत सहस्त्र नयनों वाली ।।

जय शिवदूती दुष्ट निकंदिनि, घोर महारण–क्षेत्र–रता।
जय चामुंडा मस्तक–मथनी, अति कराल कंकाल–गता ।।

लक्ष्मी, लज्जा, विद्या, श्रद्धा, जय जय, पुष्टि, स्वधा, अचला।
सत, रज, तम युक्ता महतारी, जय विभूति, ऐश्वर्य–कला।। **(60)**

वाणी, वरा, वाभ्रवी, श्यामा, नियता ईशा नमो नमो।
सर्वस्वरूपा, शक्तिधारिणी, जया पुनीता नमो नमो ।।

जय कात्यायिनि, भद्रकालि जय, असुर विदारिनि भयंकरी।
सर्वशास्त्र, सब अस्त्रधारिणी, रक्षा! रक्षा! महेश्वरी ।।

हे चण्डी! यह खड्ग तुम्हारा, करे हमारी रखवाली।
रोग, शोक, संताप नष्ट हों, जीवन में हो हरियाली ।।

वेदशास्त्र साहित्य सभी में, गूँज रहे तेरे गुणगान ।
कौन तुम्हारे सिवा जगत् को विपदाओं में देता त्राण।।

आज तुम्हारी अनुकम्पा से, दानव–दल निश्शेष हुआ।
देवों की रक्षा में अब तक, प्रकट स्वरूप विशेष हुआ ।। **(61)**

यह वरदान हमें दो मैय्या, जब जब तुमको याद करें।
तब तब दर्शन मिले तुम्हारा, वाणी गुणानुवाद करे ।।

'' हे देवो, मैं वर देती हूँ, युग युग में फिर आऊँगी।
नाना रूपों में आकर मैं, दानव–सैन्य खपाऊँगी ।।

द्वापर में मैं नन्द गोप घर, आकर धर्म बचाऊँगी।
दुष्ट खपाऊँ, विद्युत गति से विन्ध्याचल बस जाऊँगी।।

वैप्रचित वध करने फिर मैं, 'रक्त दन्तिका' कहलाऊँ।
'शाकम्भरी' भक्त हित बनकर, शाक पीठ पर उपजाऊँ।।

बनूँ 'शताक्षी' मुनियों हित, फिर से दुर्गा बन आऊँगी ।
दैत्यों का भक्षण करने गिरि पर ''भीमा'' बन जाऊँगी।। **(62)**

जब 'अरूण' दैत्य इस धरती पर भारी उत्पात मचाएगा।
तब उसे खपाने तुरत ''भ्रामरी'' रूप मेरा बन जाएगा।।

जब जब दैत्यों से देवों का, संहारक उत्पीड़न होगा।
तब तब वाणी मुखरित होगी, मेरा प्रत्यावर्तन होगा।।

हे देवो! मेरा यह चरित्र, सब बाधाओं को हर लेगा ।
इसको पढ़ने से सुनने से, जन मेरा दर्शन कर लेगा।।

यह सुख संचारक सरल योग, जो करे वही लख पाएगा।
हर संकट से, हर बाधा से, केवल इक पाठ बचाएगा ।।

जितनी प्रसन्नता होती है, अभिषेक, यज्ञ, बलिदानों से ।
उतनी प्रसन्नता मिले मुझे, मेरे चरित्र सोपानों से ।। **(63)**

इतना कहकर वह महाशक्ति क्षण भर में अन्तर्धान हुई ।
सब ओर बसन्त खिली जग में, देवों की ऊँची शान हुई।।

यो कह मेधा मुनि शांत हुए, थे विगत मोह नृप वैश्य युगल।
दोनों ने फिर तप संयम से, की देवी की साधना प्रबल ।।

देवी ने तब दर्शन देकर, दोनों को प्रिय वरदान दिया।
राजा को निश्चल राज्य दिया, निष्काम वैश्य को ज्ञान दिया।।

माँ की ममता की अमर ज्योति, यह पावन दिव्य कहानी है।
निर्मल मन से नित पाठ करो, इसकी महिमा अनजानी है।।

✡ ✡ ✡

**(64)**

# श्री दुर्गा–मानस–पूजा

हे त्रिपुर सुंदरी! कल्पलता! ये दिव्य पादुका अर्पित हैं।
चंदन, कुंकुम की गंध युक्त, मणि, मूंगो से अवगुंठित है।।

इनको धारण कर मैया तुम, सुंदर सिंहासन ग्रहण करो।
चम्पा–केतकी सुगंध भरा, उबटन तन का आवरण करो।

यह शुद्ध आँवले का फल है, व्यापक सुगंध का तत्व लिए।
केशों में मलकर स्नान करो, गंगोदक शुद्ध, महत्व लिए।।

अर्पित कस्तूरी इत्र तुम्हें, चंदन कुंकुम, कर्पूर युक्त।
धारण कर शोभा पाओ माँ, कर दो सबको दारिद्र्य–मुक्त।।

**(65)**

कर लिया स्नान तो पहनो माँ, ये दिव्य वस्त्र सुंदर तन पर।
केसर मंडित पीली चूनर, है प्रस्तुत देव–प्रिया लेकर ।।

स्वर्णिम कुंडल, मुद्रा स्वर्णिम, करधनी, मुकुट, मंजीर मधुर।
यह सुंदर स्वर्णिम कंठ–हार, तन पर सजकर दें छटा प्रचुर।।

सौभाग्यमयी, यह सिंदूरी बेंदी माथे पर दमके माँ ।
करूणापूरित इन आँखों में, काजल की रेखा चमके, माँ।।

श्रृंगार दिव्य तुम निरखो माँ, प्रस्तुत है मणि मंडित दर्पण।
हे त्रिपुर सुंदरी! सकल सृष्टि–सौंदर्य हुआ तुमको अर्पण।।

यह अर्घ्य करो स्वीकृत जननी, है दिव्य गंध से आप्लावित।
उत्पल, कनेर मल्लिका, कुमुद केतकी कमल से प्रक्षालित।।

**(66)**

यह दिव्य पुष्पमाला अर्पित, हे कमलवासिनी, चण्डी माँ।
यह दिव्य धूप चंदन कपूर, शुभ अगर सुवास, सुगंधी माँ।।

गोघृत का शुद्ध दीप प्रस्तुत, दीवट रत्नों से जड़ी हुई।
घृत है कपूर की गंध युक्त जगते ही शोभा बड़ी हुई।।

छप्पन पकवानी प्रस्तुत है, नैवेद्य सुकोमल तंदुल का।
है दिव्य स्वाद, मृदुछोंक युक्त, अत्यंत शुद्ध, पाचक, हल्का।।

भोजन करके आचमन करो, अर्पित है बीड़ा लौंग जड़ा।
माँ ग्रहण करों तांबूल पत्र, मै स्वर्ण–पात्र में लिए खड़ा।।

बैठो, सिंहासन प्रस्तुत है, स्वर्णिम रेशम के छत्र युक्त ।
मै तुम पर चँवर डुलाऊँ माँ, विश्राम करो सर्वत्र मुक्त ।।



नारद, वशिष्ठ, शुक, व्यास आदि, वेदध्वनि से गुण गान करें।
वेणू, मृदंग, वीणा बाजे, भेरी माँ का सम्मान करें।।

मानसपूजा में सम्पादित, कल्पित वैभव स्वीकार करो।
सब कुछ ऐसा ही कर पाऊँ, वह क्षमता दो उपकार करो ।।

हे दिव्य भवानी, कल्याणी, सुख–शांति–सुधा बरसा दो माँ।
संघर्ष भरा निर्मल जीवन, सरसा दो माँ, हर्षा दो माँ ।।

✡ ✡ ✡

## अष्टक

सुमाता, कल्याणी जय, जगत माता सुरसरी।
पुनीता, नित्याशा जय, तपवरिष्ठा, शिवचरी।।

महामाया, दिव्या, तव, प्रखर आलोक जग में ।
पिपासा भक्त में शुभ परम उल्लास नभ में।।

तुम्हारे हाथों में, सकल जग की रास जननी।
तुम्हीं ने संहारे, विकल मन के त्रास जननी।।

तुम्हीं माता, धाता, तुम दिवस हो, रात तुम हो।
तुम्हीं सृष्टिकारी, सगुण तुम, अज्ञात तुम हो ।।



महाशक्ति, माता, भगत तुम्हरे द्वार पर है।
सुवीणां झंकारे समुद, मन में रंग सर है।।

जगन्माता, चण्डी, सजग कर दो चित्त सबका।
तुम्हारे सेवी है, मन घटक है रिक्त सबका ।।

विभा तेरी माता, विकट तम का नाश कर दे।
छटा तेरी दुर्गा, विकल मन में ज्ञान भर दे।।

दिखाओ दीवाली, निर्मल करो गेह तन का ।
जगाओ चामुण्डी, चपल सुखदा नेह मन का ।।

✡ ✡ ✡

# क्षमा – प्रार्थना

हे मैया! मैने निशिवासर, अब तक अनगिन अपराध किए।
मैं भक्तिहीन, अपराधी हूँ, शत दुष्कर्मों का भार लिए।।

अपना ही सेवक जान मुझे, निर्दोष निरामय कर दो, माँ।
हे जगदम्बा मुझको अखण्ड श्रद्धा समृद्धि का वर दो, माँ।

आह्वान विसर्जन, पूजा, जप, तप, ध्यान, मुझे मालूम नहीं।
मैं निपट अनारी, सेवक हूँ, मेरी प्रतिभा निर्धूम नहीं।।

मै मंत्रहीन, मैं क्रियाहीन, तेरे दर्शन का अभिलाषी।
'जगदम्ब' शब्द के गौरव का, लेकिन हूँ पूरा विश्वासी।।



'जगदम्ब' बोलते ही मिलता, अपराधी को भी उच्चासन।
ब्रह्मादि देव भी कर न सकें, जप तप से जिस पद का दर्शन।।

दोषी मन से जैसे तैसे, मैने जो भी गुण गाया है।
उसको स्वीकार करो मैय्या इसमें विश्वास सवाया है।।

अज्ञान, भ्रान्ति, विस्मरण सभी, इस गुण–गायन से दूर करो।
मेरे अपराध क्षमा करके, यह अभिवादन मंजूर करो।।

है मेरा यह विश्वास अडिग, इक दिन जननी हरषाएगी।
लौकिक, दैहिक, दैविक सारे, व्यापक सन्ताप मिटाएगी।।

इक दिन ये निर्मल–पात्र, तुम्हारा कृपा–पात्र बन जाएगा।
सुख वैभव, शांति–सुधा रस से जग का आँगन भर जाएगा।।

**जय–जगदम्बे भवानी माँ**